महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा

को

पी. एच. डी. (हिन्दी) उपाधि के लिये प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

"डां० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में सामाजिक परिवेश"

(संक्षिप्ति)

*

शोध छात्रा

शगुफ़्ता नूर नूरुल ग़नी अंसारी

*

निर्देशिका

डां० शैलजा भारद्वाज

वरिष्ठ प्राध्यापिका,

हिन्दी विभाग,

कला संकाय,

म. स. विश्वविद्यालय, बड़ौदा

2015

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय

डॉ० राही मासूम रज़ा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व :-

- जन्म
- शैशववास्था
- पारिवारिक परिवेश
- शिक्षा
- कतित्व

द्वितीय अध्याय

समाज एवं उसके विविध रूप :-

- समाज की अवधारणा, स्वरूप, विविध रूप
- भारतीय समाज पर राजनीति का प्रभाव
- भारतीय समाज पर धर्म का प्रभाव
- भारतीय समाज पर संस्कृति का प्रभाव
- भारतीय सामाजिक परिवेश एवं स्वातत्र्योत्तर समाज का बदलता स्वरूप

तृतीय अध्याय

डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में समाज :-

- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में उच्च वर्गीय समाज

  डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में मध्यमवर्गीय समाज

- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में निम्नवर्गीय समाज
- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में मुस्लिम समाज
- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों के समाज में हिन्द-मुस्लिम एक्य

चतुर्थ अध्याय

डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में अभिव्यक्त समाज एवं उनका परिवेश :-

- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में आँचलिक परिवेश
- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में ग्रामीण परिवेश
- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में परिवेश की समस्याएं
- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में साम्प्रदायिक उन्माद एवं प्रभावित समाज
- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में राजनीतिक स्वार्थ एवं प्रभावित समाज

पंचम अध्याय

डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में चरित्र-चित्रण :-

- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में पात्रों का मनोविज्ञान
- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में धार्मिक विचारधाराओं से प्रभावित पात्र
- डॉ० राही मासूम रज़ा क उपन्यासों में साम्प्रदायिक उन्माद से प्रभावित पात्र
- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में राजनीति से प्रभावित पात्र
- डॉ० राही मासूम रज़ा क उपन्यासों में मानवीय मूल्यों को स्थापित करते पात्र

षष्ठ अध्याय

डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों का भाषा-शिल्प :-

- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों को परिवेशगत भाषा

  (1) प्रसंगानुकूल भाषा (2) आलंकारिक भाषा

  (3) मुहावरेदार भाषा (4) भाषा में कहावतों का प्रयोग
- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में संवादों का वशिष्टय

  (1) संक्षिप्त संवाद (2) विस्तृत सवाद

  (3) चमत्कृत संवाद (4) पात्रानुकूल सवाद

  (5) संवादों में हास्य (6) आत्मीय सवाद (7) आक्रोशपूर्ण संवाद

- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों की भाषा-शैली

  (1) आत्मकथात्मक शैली (2) पत्रात्मक शैली

  (3) डायरी शैली (4) वर्णनात्मक शैली

  (5) गीतात्मक शैली (6) पूर्वदीप्ति (फ्लैश बैक शैली)

  (7) व्यंग्यात्मक शैली

- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में लोक गीतों का प्रयोग

- डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में शब्दों की विविधता

सप्तम अध्याय

- सप्तम अध्याय मैंने उपसंहार के रूप में प्रस्तुत किया है । जिसके अन्तर्गत समस्त अध्यायों का निष्कर्ष एवं शोध की स्थापनाएं प्रस्तुत की गई हैं ।

भूमिका

डॉ० राही मासूम रज़ा एक बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार रहे हैं । राही जी ने प्रत्येक क्षेत्र में अपनी लेखनी का कमाल दिखाया है । राही जी सुप्रसिद्ध उपन्यासकार, संवेदनशील कवि एवं लेखक तथा बहुत अच्छे शायर रहे हैं । डॉ० राही मासूम रज़ा ने अपने उपन्यासों में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा साम्प्रदायिक तनावों एवं संघर्षों आदि को स्थापित किया है । इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने उपन्यासों में सामन्तशाही, शोषण, जातिगत एवं धार्मिक भेदभाव को सशक्त तरीके से अभिव्यक्त किया है । डॉ० राही मासूम रज़ा ने अपने उपन्यासों में संस्कृति और उसके मानवीय मूल्यों के यथार्थ, उसके परिवेश और आँचलिक परिवेश की विशषताओं को भी उजागर किया है ।

स्वतंत्रता पूर्व तथा उसके पश्चात देश ने आतंकवाद, साम्प्रदायिक तनावों एवं संघर्षों को झेला है । इन सभी समस्याओं का समावेश डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में हुआ है । वर्तमान में आतंकवाद की समस्या ने कवल देश को ही नहीं वरन पूरे विश्व को अपनी चपेट में ले लिया है और यह आज सबसे बड़ी चुनौती बन चुकी है । राही ने अपने उपन्यासों में इन समस्याओं का विश्लेषण करके पूरे समाज को उजागर करने का भरपूर प्रयत्न किया तथा अपने उपन्यास के माध्यम से हमें इन समस्याओं से जूझने के लिये भी प्रेरित किया है ।

आज की प्रासंगिकता में डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों ने जहाँ मनोवैज्ञानिक दृष्टि से समाज, उसकी संस्कृति, उसके परिवेश की व्याख्या की है, उस पर पड़ने वाल साम्प्रदायिक तनावों एवं प्रभावों को प्रस्तुत किया है, तो वहीं दूसरी ओर मानवीय संवेदनाओं को जगाकर मानवीय मूल्यों की स्थापना करने का भी सफल प्रयत्न किया है । इस दृष्टि से इस पर शोध करना मुझे नवीन भी लगा और प्रासंगिक भी ।

डॉ० राही मासूम रज़ा एक मूर्धन्य उपन्यासकार, लेखक एवं कवि रहे हैं । वे जितने महान उपन्यासकार रहे हैं, उतने ही महान कवि भी रहे हैं । डॉ० राही मासूम रज़ा ने अपने उपन्यासों और कविताओं दोनों में ही राजनीतिक एवं सामाजिक समस्याओं को उद्घोषित किया है । विश्व की आतंकवाद जैसी भीषण समस्याएं उनके उपन्यासों में मौज़ूद हैं । भिन्न-भिन्न उपन्यासकारों को पढ़ने की उत्सुकता मुझे हमेशा से रही । मैंने अनेक उपन्यासकारों को पढ़ा तथा उनसे ज्ञान प्राप्ति की, किन्तु राही मासूम रज़ा के उपन्यासों से मैं अत्यधिक प्रभावित रही, क्योंकि राही जी ने अपने उपन्यासों में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा आतंक वाद जैसी भयंकर समस्याओं का यथार्थ रूप में चित्रण किया है ।

डॉ० राही मासूम रज़ा ने अपने उपन्यासो में हिन्दू- मुस्लिम सम्बन्धों का भी यथार्थ चित्रण किया है । हिन्दू-मुस्लिम जैसे संकुचित अभियानों को उन्होंने कभी नहीं माना । राही जी के उपन्यासों में यह स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हुआ है कि वे अनेकता में एकता के ऋणी रहे हैं।

उन्होंने समाज से जातिगत एवं धार्मिक भेदभाव, साम्प्रदायिक तनावों, संघर्षों आदि समस्याओं को दूर करने का प्रयत्न किया है । इसके अतिरिक्त राही जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से हमें भी इन समस्याओं से जूझने को प्रेरित किया है । परिणामतः इस विषय के प्रति मेरा अधिक आकर्षण एवं रुचि रही । अतएव मैंने **'डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में सामाजिक परिवेश'** विषय पर विस्तृत विवरण प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है । इस सम्पूर्ण शोध प्रबंध की संयोजना सात अध्यायों में विभक्त की गई है जिसकी सारांश रूपरेखा इस प्रकार है -

- **प्रथम अध्याय** में मैंने डॉ० राही मासूम रज़ा का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है जिसके अन्तर्गत डॉ० राहो मासूम रज़ा का जन्म, उनके माता-पिता, शैशवावस्था, उनकी शिक्षा, पारिवारिक संकट, जीविकोपार्जन राही जी का अध्यापन कार्य तथा अन्य सेवावृत्ति से परिचित कराया है । इसके अतिरिक्त डॉ० राही मासूम रज़ा के विचारों तथा उनके व्यक्तिगत अनुभवों एवं समाज पर पड़ने वाले उनके प्रभाव आदि को प्रस्तुत किया है ।

- **द्वितीय अध्याय** में मैंने समाज को अवधारणा क्या है ? उसका स्वरूप क्या है ? इस पर प्रकाश डाला है । भारतीय समाज के विविध रूप हैं यथा आर्थिक दृष्टि से उच्च वर्गीय समाज, मध्यम वर्गीय समाज, निम्न वर्गीय समाज आदि का विवरण दिया है । इसके अतिरिक्त दलित समाज एवं आदिवासी समाज को भी विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया है ।

भारतीय समाज का स्वरूप परिवर्तनशील है । अथवा समाज का स्वरूप बदलता रहता है । इस बदलते समाज के स्वरूप को प्रस्तुत किया है । स्वातंत्र्योत्तर समाज की स्थिति क्या थी एवं स्वतंत्रता के पश्चात समाज की क्या स्थिति रही, इसका भी विस्तृत रूप में अध्ययन प्रस्तुत किया है । इसके अतिरिक्त इस अध्याय में मैंने भारतीय समाज पर पड़ने वाले राजनीतिक प्रभाव, धार्मिक प्रभाव तथा सांस्कृतिक प्रभाव आदि का भी अध्ययन प्रस्तुत कि या है ।

- **तृतीय अध्याय** में मैंने डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में अभिव्यक्त समाज का विस्तृत रूप से परिचय दिया है । जिसके अन्तगत उच्च वर्गीय समाज, मध्यम वर्गीय समाज तथा निम्न वर्गीय समाज को वर्गीकृत किया है । इसके अतिरिक्त राही जी के उपन्यासों में मुस्लिम समाज के जीवंत चित्र प्रस्तुत हुए हैं, जिसका मैंने यथार्थ रूप प्रस्तुत किया है । साथ ही डॉ० मासूम रज़ा के उपन्यासों में हिन्दू-मुस्लिम एकता का जो सुन्दर चित्रण हुआ है उसका भी अध्ययन प्रस्तुत किया है ।

- **चतुर्थ अध्याय** में मैंने डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में ग्रामीण परिवेश के सुन्दर चित्र प्रस्तुत हुए हैं । जिसका विस्तृत रूप से अध्ययन प्रस्तुत किया है । साथ ही ग्रामीण परिवेश में जो समस्याए उभरकर आयीं हैं, उन पर भी प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है । यथा अंधविश्वास, नारी-शिक्षा, दरिद्रता, बेरोज़गारी आदि समस्याओं पर प्रकाश डाला है । साथ

ही डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में आँचलिक परिवेश किस प्रकार का अभिव्यक्त हुआ है इसका भी अध्ययन प्रस्तुत किया है । डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में जो साम्प्रदायिक उन्माद एवं उससे प्रभावित समाज का चित्रण हुआ है । उसका अध्ययन प्रस्तुत किया है । राही जी ने अपने उपन्यासों में राजनीतिक स्वार्थ एवं उससे प्रभावित समाज की अभिव्यक्ति का जो यथार्थ रूप में चित्रण किया है, उसका अध्ययन प्रस्तुत किया है ।

- **पंचम अध्याय** में मैंने डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों के पात्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है । परिवेश एवं अनुभूति व्यक्ति की मानसिकता पर बहुत प्रभाव डालते हैं । इस दृष्टि से मैंने पात्रों की मानसिक स्थिति का अध्ययन प्रस्तुत किया है । इसके अतिरिक्त धार्मिक विचारधाराओं से प्रभावित पात्रों का अध्ययन प्रस्तुत किया है । एक सामाजिक प्राणी राजनीति से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता । राही जी के उपन्यासों में राजनीति से प्रभावित पात्र दृष्टिगोचर हुए हैं । इस दृष्टि से मैंने उनके उपन्यासों में राजनीति से प्रभावित पात्रों का अध्ययन प्रस्तुत किया है । साथ ही साम्प्रदायिक तनाव से प्रभावित पात्र आदि का अध्ययन प्रस्तुत करते हुए राही जी के उपन्यासों में मानवीय मूल्यों को स्थापित करते पात्रों का भी अध्ययन प्रस्तुत किया है ।

- **षष्ठ अध्याय** में मैंने डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में प्रयुक्त भाषा-शिल्प का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया है जिसके अन्तर्गत डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों की भाषा को

वर्गीकृत किया गया है । राही मासूम रज़ा ने अपने उपन्यासों में किस प्रकार की शैली का प्रयोग किया है, उसका भी अध्ययन प्रस्तुत किया है । उनके उपन्यासों में शब्दों की विविधता दृष्टिगोचर होती है जिसमें उर्दू, अरबी, भोजपुरी, अवधी, अंग्रेजी, आदि शब्दों के दर्शन होते हैं । इसके अतिरिक्त राही जी के उपन्यासों में संवादों का वैशिष्टय रूप देखने को मिलता है जिसका विस्तृत रूप से अध्ययन प्रस्तुत किया है । राही जी ने अपने कुछ उपन्यासों में लोकगीतों का भी प्रयोग किया है जिसका मैंने विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया है ।

- **सप्तम अध्याय** मैंने उपसंहार के रूप में पस्तुत किया है । जिसके अन्तर्गत समस्त अध्यायों का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है ।

मैं इस शोध प्रबन्ध की निर्देशिका आदरणीय डॉ० शैलजा भारद्वाज जी का हृदयपूर्वक आभार व्यक्त करती हूँ जिनके निर्देशन एवं मार्ग दर्शन में मैं अपने काम को अंजाम दे पायी । साथ हो डॉ० अनीता शुक्ला जी का मैं सहृदय आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मेरी शोध से सम्बन्धित अनेक समस्याओं को हल करने में सहायता की । हिन्दी विभाग के अन्य सभी अध्यापकों का मैं सहृदय आभार व्यक्त करती हूँ । गुजराती विभाग के अध्यापक डॉ० भरत मेहता जी का भी मैं सहृदय आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने अपना मूल्यावान समय निकालकर मेरे विषय सम्बन्धित चर्चा कर मेरी सहायता की । इसके साथ ही मैं सरकारी महाविद्यालय दमन की अध्यापिका डॉ० सध्या मेरिया जी का बहुत-बहुत आभार व्यक्त करती हूँ

जिन्होंने मेरी विशेष रूप से सहायता की । साथ ही मेरे शोध प्रबन्ध में सहायक अन्य महानानुभावों का भी मैं सहृदय आभार व्यक्त करती हूँ ।

इसके अतिरिक्त श्रीमती हंसा महेता लाइब्रेरी के पूरे विभाग का आभार व्यक्त करती हूँ । जिसमें विशेष रूप से श्री चौधरी जीतेश गुलाबराव जी का मैं बहुत-बहुत आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने विषय सम्बन्धित पुस्तकें उपलब्ध करानें में मुझे सहायता प्रदान की । साथ ही सेंट्रल लाइब्रेरी मांडवी (बड़ौदा) तथा एंडयूज़ लाइब्रेरी चौक, (सूरत) लाइब्रेरी का भी मैं आभार व्यक्त करती हूँ जहाँ मुझे अपने विषय से सम्बन्धित पुस्तकों की प्राप्ति हुई ।

******

मूल ग्रन्थ

1 आधा गाँव	राही मासूम रज़ा
2 टोपी शुक्ला	राही मासूम रज़ा
3 हिम्मत जौनपुरी	राही मासूम रज़ा
4 सीन : 75	राही मासूम रज़ा
5 दिल एक सादा काग़ज़	राही मासूम रजा
6 ओस की बूँद	राही मासूम रजा
7 कटरा-बी-आर्ज़ू	राही मासूम रजा
8 असंतोष के दिन	राही मासूम रज़ा
9 नीम का पेड़	राही मासूम रज़ा
10 छोटे आदमी की बड़ी कहानी	राही मासूम रज़ा
11 मैं एक फेरी वाला	राही मासूम रज़ा
12 ग़रीबे शहर	राही मासूम रज़ा
13 लगता है बेकार गये हम	राही मासूम रज़ा
14 खुदा हाफ़िज़ कहने का मोड़	राही मासूम रज़ा

******

सन्दर्भ स ूची

1. राही मासूम रज़ा का रचना संसार — डॉ० रेहाना रिज ़वी
2. मैं एक फरी वाला — डॉ० राही मासूम रज़ा
3. राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में व्यक्त जीवन- दशन — डॉ० सुनन्दा मग्गीवार
4. प्रभाकर माचवे के उपन्यासों में समसामयिक दृष्टि — डॉ० मंज़ूर सैयद
5. डॉ० राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में समकालीन संदर्भ — डॉ० शैलजा जायसवाल
6. राही मासूम रज़ा : एक अध्ययन — डॉ० जिलेदार सिंह
7. समाज दर्शन के मूल तत्व — डॉ० राम जो सिह
8. विष्णु प्रभाकर के नाटय साहित्य में सामाजिक चतना — डॉ० बी० एस ० पिल्ल
9. शिवानी के उपन्यासों में प्रतिबिंबित समाज — डॉ० सि द्राम खोत
10. मध्ययुगीन भारत ीय स माज एवं सस्कतृि — डॉ० कन्हैया लाल
11. स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी आँचलिक उपन्यासों दलित जीवन — डॉ० झारखण्डे चौबे
12. भारतीय मध्यवर्ग और सामाजिक उपन्यास — डॉ० पी० एस० थामस
13. कमलेश क कथा-साहित्य में मध्यवर्ग — डॉ० विमल ेश वर्मा
14. कमलेश के साहित्य में वर्ग सघर्ष — डॉ० विमल ेश वर्मा

15. भगवती चरण वर्मा के उपन्यास और युग-चेतना — डॉ० ज वाहर ल ाल श ुक्ल

16. आँचलिक उपन्यासों में वर्ण एवं संघर्ष — डॉ० अशोक धुलधुल

17. दलित साहित्य अनुसंधान के आयाम — डॉ० भरत सगरे

17. अम्बेडकर सौन्दर्यशास्त्र और दलित, आदिवासी- जनजातीय-विमश — डॉ० जवाहर लाल शुक्ल

18. दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र — डॉ० ओम प्रकाश वाल्मीको

19. भील जनजीवन और संस्कृति — डॉ० अशोक डी० पाटिल

20. दलित-चेतना और हिन्दी उपन्यास — डॉ० कुमार पाठक

21. आदिवासी एवं उपेक्षित जन — डॉ० भीमराव पिंगल

22. भारत की जनजातिया — डॉ० शिवतोष दास

23. सामाजिक क्रान्ति के प्रणेता महात्मा ज्योतिराव फुले — डॉ० ममता गंगवार, अजय प्रताप सिंह

24. भारत कल आज और कल — डॉ० मंजर सयद

25. उपन्यासकार इलाचन्द्र जोशी — डॉ० आर० एस० हरिकमार

26. प्रसाद साहित्य म युग-चेतना — श्री मतो लोलावतो देवी गुप्ता

27. संस्कृति का अर्थ और आधुनिक संदर्भ में संस्कृति की उपयोगिता — डॉ० आर० श्यामला

28. भारतीय धर्म और संस्कृति — डॉ० शशि तिवारी

29. हिन्दी के आँचलिक उपन्यास सामाजिक, सांस्कतिृक सदर्भ — विमल शकर नागरे

30. समाजशास्त्र का परिचय	प्रो० सत्यपाल राहेला
31. जगत ना विद्यमान धर्मो (गुजराती)	आनन्द जी याज्ञिन
32. भारतोय सस्कतृि	कसम वाजपेयी
33. संस्कृति के चार अध्याय	रामधारी सिंह दिनकर
34. धर्म एक स्वरूप अनेक	प्रो० डॉ० तातेड़, विद्यासागर सिंह
35. शैली विज्ञान संकल्पना एवं स्वरूप	डॉ० पांडुरंग चिलगर
36. आठवें दशक के उपन्यासों का उपन्यासों का समाजशास्त्री अध्ययन	डॉ० शोभा कुलकर्णा
37. उपन्यासकार मधुकर सिहं	डॉ० संजय नवले
38. व्यंग्य का समकालीन पारिदृश्य	सं० प्रेम जनमेजय
39. कथाकार भीष्म साहनी	डॉ० कृष्णा पटेल
40. डॉ० शिवप्रसाद सिह का कथा-साहित्य	डॉ० अमित अवस्थी
41. हिन्दी क आँचलिक उपन्यास	डॉ० विद्याधर द्विवेदी
42. अज्ञेय के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का मनोविश्लेषण	डॉ० मफतलाल पटेल
43. हन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ० मनीषा ठक्कर
44. मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार इलाचंद्र जोशी एवं अज्ञेय	डॉ० सुशील जो धर्माणी
45. मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार जैनेन्द्र	डॉ० स ुशील जो धर्माणी
46. डॉ० रामदरश मिश्र के उपन्यास	डॉ० दिनेश प्रसाद सिह

47. दलित चेतना और हिन्दी उपन्यास	डॉ० एन० एस० परमार
48. धर्मवीर भारती : युग चेतना और अभिव्यक्ति	डा० सरिता शुक्ला
49. समय के साक्षी प्रमुख मुस्लिम उपन्यासकार	डॉ० तसनीम पटेल
50. भारत-विभाजन और हिन्दी उपन्यास	डॉ० रसीला उमरेटिया
51.अवधी और भोजपुरी लोकगीतों का सामाजिक स्वरूप	अनीता उपाध्याय

पत्रिका

सुलभ-इंडिया द्वि-मासिक पत्रिका

डॉ० बिन्देश्वर पाठक,

एस० पी० सिन्हा